इकाई 2 चाणक्यनीति पद्य 1 से 8 (अन्वय, शब्दार्थ, अनुवाद, व्याख्या, व्याकरणात्मक टिप्पणी)

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 काव्यांश की व्याख्या

- 2.2.1 मंगलाचरण
- 2.2.2 ग्रन्थ-अध्ययन से लाभ
- 2.2.3 ग्रन्थ का प्रयोजन
- 2.2.4 कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का बोध
- 2.2.5 धन की निस्सारता
- 2.2.6 त्यागने योग्य स्थान

2.3 सारांश

2.4 शब्दावली

2.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप

- चाणक्य नीति की विशेषताओं को जानेंगे ।
- भारतीय परम्परा में मंगलाचरण की विधा को जानेंगे ।
- भारतीय प्राचीन ग्रंथों के सार को जानेंगे ।
- लोकनीति की शिक्षा प्राप्त करेंगे ।
- जीवन में करणीय व अकरणीय कार्यों के विषय में जानेंगे ।
- संस्कृत में मूल धातुओं से शब्द संरचना, क्रियापद, अनेक सन्धियों व समासों को जानेंगे।
- अनुष्टुप् छन्द के विषय में जानेंगे ।

2.1 प्रस्तावना

आचार्य चाणक्य द्वारा विरचित चाणक्य नीति नामक ग्रन्थ विश्व प्रसिद्ध है । इसमें दैनिक-जीवन, समाज और जगत् से सम्बद्ध गूढ व दुर्लभ ज्ञान अत्यन्त सरल भाषा में समाहित है । अपने दैनिक जीवन में चाणक्य द्वारा प्रतिपादित नीतियों का अनुसरण करने से मनुष्य सुख व शान्ति प्राप्त करता है । मनुष्य के व्यक्तित्व में बहु आयामी विकास हेतु यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है ।

2.2 काव्यांश की व्याख्या

2.2.1 मङ्गलाचरण

प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम् ।
नानाशास्त्रोद्धृतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयम् ।। 1।।

प्रसङ्ग – प्रस्तुत पद्य में नमस्कारात्मक मंगलाचरण है, जिसमें आचार्य चाणक्य इस ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये विष्णु भगवान् को प्रणाम करते हैं । ग्रन्थ के प्रारम्भ में किया गया मंगलाचरण पाठकों, व्याख्याकारों तथा शिष्य-परम्परा के लिये कल्याणकारी होता है ।

अन्वय – (अहं) त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुं विष्णुं शिरसा प्रणम्य नानाशास्त्रोद्धृतं राजनीतिसमुच्चयं वक्ष्ये ।

शब्दार्थ – **अहम्** = मैं, **त्रैलोक्याधिपतिम्** = तीनों लोकों (पृथिवी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग) के पालक, **प्रभुम्** = स्वामी, **विष्णुम्** = सभी ओर व्याप्त ईश्वर अर्थात् विष्णु को, **शिरसा** = शिर से, **प्रणम्य** = प्रणाम करके, **नानाशास्त्रोद्धृतम्** = अनेक (वेद, पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि) शास्त्रों से निकाल कर, **राजनीतिसमुच्चयम्** = राजनीति समुच्चय नामक ग्रन्थ को (आचार्य चाणक्य ने अपने इस ग्रन्थ को राजनीति समुच्चय नाम दिया था, परन्तु बाद में यह नाम गौण हो गया व इसका नाम चाणक्य नीति दर्पण हो गया), **वक्ष्ये** = कहूँगा ।

अनुवाद – मैं तीनों लोकों (पृथिवी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग) के पालक, स्वामी, सभी ओर व्याप्त ईश्वर अर्थात् विष्णु को शिर से प्रणाम करके

अनेक शास्त्रों से निकाल कर 'राजनीति समुच्चय' नामक ग्रन्थ को कहूँगा ।

व्याख्या - भारतीय संस्कृति में प्रायः यह देखा गया है कि किसी भी शुभ कार्य अथवा ग्रन्थ को प्रारम्भ करने से पहले मंगल कामना की जाती है । कवि यह मंगल कामना ग्रन्थ के प्रथम पद्य के माध्यम से व्यक्त करता है, जिसे मंगलाचरण कहा जाता है । ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये मंगलाचरण किया जाता है । आचार्य चाणक्य ने भी इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए ग्रन्थ के प्रारम्भ में नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया है । मंगलाचरण तीन प्रकार का होता है – 1. नमस्कारात्मक, 2. आशीर्वादात्मक, 3 = वस्तुनिर्देशात्मक (कथा वस्तु का निर्देश) । प्रस्तुत पद्य में नमस्कारात्मक मंगलाचरण है, जिसमें आचार्य चाणक्य विष्णु भगवान् को प्रणाम करके 'राजनीति समुच्चय' नामक ग्रन्थ का लेखन प्रारम्भ कर रहे हैं । आचार्य चाणक्य विष्णु भगवान् के परम् भक्त हैं अतः पृथ्वी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग तीनों लोकों के स्वामी विष्णु भगवान् की आराधना करके ग्रन्थ का प्रारम्भ कर रहे हैं । आप्टे के अनुसार - विष्णु शब्द का अर्थ है – **यस्माद् विश्वम् इदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः, तस्माद् एव उच्यते विष्णुः विश्वातो प्रवेशात्**[1] अथवा **विष्नोति व्याप्नोति विश्वम्, वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् स विष्णुः** । देवत्रयी ब्रह्मा, विष्णु व शिव में से विष्णु भगवान् को ही संसार के पालन-पोषण का कार्य सौंपा गया है । आचार्य चाणक्य ने अपने ग्रन्थ का नाम 'राजनीति-समुच्चय दिया है, जिसमें सरल रूप में राजनीति से सम्बद्ध सभी सिद्धान्त पाठक को एकत्र प्राप्त होते हैं । महर्षि चाणक्य ने वेद, पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत, उपनिषद् आदि ग्रन्थों का सार ग्रहण कर इस ग्रन्थ का निर्माण किया है ।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है । अनुष्टुप् छन्द का लक्षण है –

श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं,
सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं,
सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।।

---

[1] आप्टे, वामन शिवराम , संस्कृत हिन्दी कोश, पृष्ठ 962

अनुष्टुप् छन्द में 4 पाद होते हैं व प्रत्येक पाद में 8 अक्षर होते हैं । इसमें छठा वर्ण सर्वदा गुरु होता है और पाँचवा वर्ण सदा लघु (ह्रस्व मात्रा – अ, इ, उ, ऋ) होता है। द्वितीय व चतुर्थ पाद में सप्तम वर्ण सर्वदा लघु तथा प्रथम व तृतीय पाद में सप्तम वर्ण सर्वदा गुरु होता है । अन्य वर्ण गुरु अथवा लघु हो सकते हैं ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

प्रणम्य = प्र उपसर्ग, नम् धातु, ल्यप् प्रत्यय = प्रणाम करके ।

शिरसा = शिरस् मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग), तृतीया विभक्ति, एकवचनम् = शिर से ।

प्रभुम् = प्रभु मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), द्वितीया विभक्ति, एकवचन = प्रभु को ।

विष्णुम् = विष्णु मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), द्वितीया विभक्ति, एकवचन = विष्णु को ।

वक्ष्ये = ब्रू धातु, आत्मने पद, लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन = कहूँगा।

त्रैलोक्याधिपतिम् = त्रिलोकस्य अधिपतिः तम्, षष्ठी तत्पुरुष समास = तीनों लोकों के स्वामी को त्रैलोक्य + अधिपतिम् ।

शास्त्रोद्धृतम् = शास्त्र + उद्धृतम् ।

2.2.2 ग्रन्थ-अध्ययन से लाभ

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः ।
धर्मोपदेशविख्यातं कार्याऽकार्यं शुभाशुभम् ।। 2।।

प्रसङ्ग – प्रस्तुत पद्य में आचार्य चाणक्य यह बतला रहे हैं कि इस राजनीति-समुच्चय नामक ग्रन्थ को पढ़ने से क्या लाभ होगा ।

अन्वय – सत्तमः नरः इदं यथाशास्त्रं अधीत्य धर्मोपदेशविख्यातं कार्याकार्यं शुभाशुभं जानाति।

शब्दार्थ – **सत्तमः** = उत्तम, **नरः** = मनुष्य, **इदम्** = इस (राजनीति समुच्चय नामक ग्रन्थ) को, **यथाशास्त्रम्** = विधिवत्, **अधीत्य** = पढ़कर, **धर्मोपदेशविख्यातम्** = धर्मशास्त्रों में उक्त, **कार्याकार्यम्** = कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को, **शुभाशुभम्** = शुभ और अशुभ को, **जानाति** = जान लेता है ।

अनुवाद – उत्तम मनुष्य इस (ग्रन्थ) को विधिवत् पढ़कर धर्मशास्त्रों में बतलाए गये कर्त्तव्य व अकर्त्तव्य तथा शुभ और अशुभ को जान लेता है ।

व्याख्या – आचार्य चाणक्य कहते हैं कि जो मनुष्य इस राजनीति के सिद्धान्तों से परिपूर्ण ग्रन्थ को पढ़ लेता है, वह जीवन में क्या करना चाहिये व क्या नहीं करना चाहिये इस बात को जान लेता है । वह इतना व्यवहार कुशल हो जाता है कि दूर से ही किसी भी कार्य के उचित व अनुचित परिणामों का ज्ञान कर लेता है । अतः उस मनुष्य की गणना उत्तम मनुष्यों में होती है । धर्मशास्त्र प्राचीन भारत के सामाजिक विधि-विधानों का विश्वकोश है, जिसमें मनुष्यों के करणीय व अकरणीय कार्यों का वर्णन है।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

सत्तमः = सत्तम मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = उत्तम ।

नरः = नर मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = मनुष्य ।

इदम् = इदम् मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग), द्वितीया विभक्ति, एकवचन = इस (राजनीति समुच्चय नामक ग्रन्थ) को ।

यथाशास्त्रम् = शास्त्रानुसारम् - अव्ययीभाव समास = विधिवत् (शास्त्रों के अनुसार) ।

अधीत्य = अधि उपसर्ग + इङ् (अध्ययने = अध्ययन के अर्थ में) धातु + ल्यप् प्रत्यय = पढ़कर।

धर्मोपदेश = धर्मस्य उपदेशः (षष्ठी तत्पुरुष समास) धर्म + उपदेश ।

कार्याऽकार्यम् = कार्य + अकार्यम् , कार्यं च अकार्यम् च द्वन्द्व समास ।

शुभाशुभम् = शुभ + अशुभम्, शुभं च अशुभम् च द्वन्द्व समास ।

जानाति = ज्ञा धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन = जानता है ।

2.2.3 ग्रन्थ का प्रयोजन

तदहं सम्प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।
येन विज्ञानमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते ।। 3 ।।

प्रसङ्ग – प्रकृत ग्रन्थ को लिखने का प्रयोजन आचार्य चाणक्य इस पद्य के माध्यम से बतला रहे हैं ।

अन्वय –अहं लोकानां हितकाम्यया तत् सम्प्रवक्ष्यामि यस्य विज्ञानमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते ।

शब्दार्थ –**अहम्** = मैं, **लोकानाम्** = लोगों के, **हितकाम्यया** = कल्याण की कामना से, **तत्** = उन (राजनीति के गूढ रहस्यों को), **सम्प्रवक्ष्यामि** = सम्यक् (ठीक) प्रकार से कहूँगा, **यस्य** = जिसके, **विज्ञानमात्रेण** = ज्ञान मात्र से, **सर्वज्ञत्वम्** = सर्वज्ञता को, **प्रपद्यते** = प्राप्त किया जाता है ।

अनुवाद –मैं लोगों के कल्याण की कामना से उन (राजनीति के गूढ रहस्यों) को सम्यक् (ठीक) प्रकार से कहूँगा, जिसके ज्ञान मात्र से सर्वज्ञता को प्राप्त किया जाता है ।

व्याख्या –आचार्य चाणक्य अपने इस ग्रन्थ की विशेषता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह ग्रन्थ लोगों की भलाई के लिये ही लिखा जा रहा है । राजनीति का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है अतः राजनीति के सभी सिद्धान्तों को समझना एक टेढ़ी खीर के समान है, परन्तु इस एक ग्रन्थ में राजनीति के सभी गूढ रहस्य वर्णित हैं । जो व्यक्ति इस ग्रन्थ को ठीक प्रकार से जान लेगा, वह अवश्य ही सर्वज्ञता को प्राप्त कर लेगा । इस ग्रन्थ के अध्ययन से मनुष्य भूत, भविष्य व वर्तमान में उचित लोकव्यवहार को भलीभाँति जान सकता है । वह उत्तम कार्यों में संलग्न होगा व अनुचित कार्यों से दूर हो जायेगा।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

अहम् = अस्मद् मूल शब्द, प्रथमा विभक्ति, एकवचन = मैं ।

लोकानाम् = लोक मूल शब्द, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन = लोगों के ।

हितकाम्यया = हितकाम्या मूल शब्द (स्त्रीलिङ्ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन = कल्याण की कामना से ।

तत् = तत् मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग) द्वितीया विभक्ति, एकवचन = उन (राजनीति के गूढ रहस्यों को) ।

सम्प्रवक्ष्यामि = सम् उपसर्ग, प्र उपसर्ग, ब्रू धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष,

एकवचन = (ठीक) प्रकार से कहूँगा ।

यस्य = यत् मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन = जिसके ।

विज्ञानमात्रेण = विज्ञानमात्र मूल शब्द, तृतीया विभक्ति, एकवचन = ज्ञान मात्र से ।

सर्वज्ञत्वम् = सर्वज्ञ + त्व प्रत्यय = सर्वज्ञता ।

प्रपद्यते = प्र उपसर्ग, पद् धातु, लट् लकार प्रथम पुरुष, एकवचन (कर्मणि प्रयोग) = प्राप्त किया जाता है ।

2.2.4 कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का बोध

मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टस्त्रीभरणेन च ।
दुःखितैः सम्प्रयोगेण पण्डितोऽप्यवसीदति ।। 4 ।।

प्रसङ्ग – प्रस्तुत पद्य में आचार्य चाणक्य ने बतलाया है कि जीवन में कुछ विशेष प्रकार के लोगों से सर्वदा दूरी बनाए रखनी चाहिए, जिससे मनुष्य दुःखी न हो ।

अन्वय – मूर्खशिष्योपदेशेन दुष्टस्त्रीभरणेन च दुःखितैः सम्प्रयोगेण पण्डितः अपि अवसीदति ।

शब्दार्थ – **मूर्खशिष्योपदेशेन** = मूर्ख शिष्यों को उपदेश देने से, **च** = और, **दुष्टस्त्रीभरणेन** = दुष्ट स्त्री का भरण पोषण करणे से, **दुःखितैः** = दुःखियों के साथ, **सम्प्रयोगेण** = व्यवहार करने से, **पण्डितः** = बुद्धिमान् मनुष्य, **अपि** = भी, **अवसीदति** = दुःखी होता है ।

अनुवाद – मूर्ख शिष्यों को उपदेश देने से और दुष्ट स्त्री का भरण पोषण करने से, दुःखियों के साथ व्यवहार करने से बुद्धिमान् मनुष्य भी दुःख प्राप्त करता है ।

व्याख्या – आचार्य चाणक्य का कहना है कि मूर्ख हठी शिष्य को कभी उपदेश नहीं देना चाहिये क्योंकि मूर्खों को उपदेश देने से लाभ नहीं अपितु हानि ही होती है । मूर्ख शिष्य विद्या का सदुपयोग न करके दुरुपयोग करता है व अपने गुरुजनों का भी अपमान करता है । बुद्धिहीन शिष्य को उपदेश देने से समय व श्रम की हानि निश्चित है, अतः बुद्धिहीन

शिष्य को कदापि उपदेश नहीं देना चाहिये । ऐसी स्त्री जो व्यभिचारिणी हो उसका भरण पोषण करने से भी मनुष्य अनेक दुःख भोगता है । दुःखी मनुष्य के साथ जो व्यक्ति अत्यन्त घनिष्ठता रखता है वह भी निश्चित रूप से अनेक कष्टों को उठाता है और दुःखी होता है । अतः विद्वान् जनों को इन तीनों से दूरी बनाए रखनी चाहिये, क्योंकि इन तीनों की संगत अत्यन्त सन्तापकारी होती है ।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

मूर्खशिष्योपदेशेन = मूर्खः शिष्यः, मूर्खशिष्यः (तत्पुरुष समास) तम् प्रति उपदेशः, तेन , मूर्खशिष्य + उपदेशेन = मूर्खोपदेशेन = मूर्ख शिष्यों को उपदेश देने से ।

दुःखितैः = दुःखित मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), तृतीया विभक्ति, बहुवचन = दुखियों के साथ ।

सम्प्रयोगेण = सम् उपसर्ग, प्रयोग मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), तृतीया विभक्ति, एकवचन = व्यवहार करने से ।

पण्डितः = पण्डित मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = बुद्धिमान् मनुष्य ।

अवसीदति = अव उपसर्ग, सीद् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन = दुःखी होता है ।

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः ।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः।। 5 ।।

प्रसङ्ग – प्रस्तुत पद्य में आचार्य चाणक्य पुनः कहते हैं कि जीवन में किन लोगों से व किस प्रकार के स्थल से सर्वदा दूरी बनाए रखनी चाहिए, जिससे मनुष्य कष्ट को प्राप्त न करे ।

अन्वय – दुष्टा भार्या शठं मित्रम् उत्तरदायकः भृत्यः ससर्पे च गृहे वासः मृत्युः एव संशयः न ।

शब्दार्थ – **दुष्टा** = दुष्ट अथवा व्यभिचारिणी, **भार्या** = पत्नी, **शठम्** = धूर्त, **मित्रम्** = मित्र, **उत्तरदायकः** = उत्तर देने वाला अर्थात् पलट कर जवाब देने वाला, **भृत्यः** = सेवक, **ससर्पे गृहे** =साँप वाले घर में (अर्थात्

जहाँ साँप रहता हो), **च** = और, **वासः** = निवास करना, **मृत्युः** = मृत्यु, एव = ही (है), **संशयः** = (इसमें कोई) सन्देह, **न** = नहीं है ।

अनुवाद – दुष्ट अथवा व्यभिचारिणी पत्नी, धूर्त स्वभाववाला मित्र, उल्टा जवाब देने वाला नौकर और साँप वाले घर में (अर्थात् जहाँ सांप रहता हो वहाँ) निवास करना निश्चित रूप से मृत्यु ही है (इसमें कोई) सन्देह नहीं है ।

व्याख्या – जिसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है अर्थात् किसी अन्य पुरुष के साथ प्रेम में लीन हो, उसका जीवन मृत्यु के समान है । व्यभिचारिणी स्त्री के साथ रहने वाला पुरुष आर्थिक व मानसिक रूप से निश्चित तौर पर नष्ट हो जाता है । अतः चाणक्य व्यभिचारिणी स्त्री से अत्यन्त दूरी बनाए रखने का निर्देश देते हैं । प्रायशः मित्रों के पास गूढ रहस्य छिपे होते हैं, परन्तु यदि कोई मित्र अत्यन्त कुटिल स्वभाव वाला हो तो उससे यथाशीघ्र दूर हो जाना चाहिये क्योंकि वह धूर्त स्वभाव के कारण कभी भी धोखा दे सकता है । उल्टा जवाब देने वाले नौकर का भी यथासम्भव यथाशीघ्र त्याग कर देना चाहिये, क्योंकि वह कभी भी किसी के भी समक्ष स्वामी के मान अपमान का विचार नहीं करेगा । जिस घर में सर्प का वास हो वहाँ नित्य ही भय का वातावरण बना रहता है, अतः आचार्य चाणक्य कहते हैं कि जिस घर में इनका वास हो वहाँ मृत्यु निश्चित ही है, अतः इन सभी से उचित दूरी बना कर रखनी चाहिये ।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

दुष्टा = दुष्टा मूल शब्द (स्त्रीलिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = दुष्ट स्त्री ।

भार्या = भार्या मूल शब्द (स्त्रीलिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = पत्नी ।

मित्रम् = मित्र मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = मित्र ।

भृत्यः = भृत्य मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = सेवक / नौकर ।

गृहे = गृह मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग), सप्तमी विभक्ति, एकवचन = घर में ।

ससर्पे = अव्ययीभाव समास – सर्पेण युगपत् (गृहम्) तस्मिन्

भृत्यश्चोत्तरदायकः = भृत्यः + च + उत्तरदायकः ।

मृत्युरेव = मृत्युः + एव ।

दायकः = दा धातु, ण्वुल् प्रत्यय प्रथम पुरुष, एकवचन ।

आपदर्थे धनं रक्षेद् दारान् रक्षेद् धनैरपि ।
आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि ।। 6 ।।

प्रसङ्ग – जीवन में क्या सर्वाधिक रक्षणीय है, इस भाव को प्रस्तुत पद्य में स्पष्ट किया गया है ।

अन्वय – आपदर्थे धनं रक्षेद् धनैरपि (धनैः + अपि) दारान् रक्षेत् सततं दारैरपि (दारैः+ अपि) धनैरपि (धनैः + अपि) आत्मानं रक्षेद् ।

शब्दार्थ – **आपदर्थे** = आपत्ति काल के लिये, **धनम्** = धन की, **रक्षेद्** = रक्षा करनी चाहिये, **धनैरपि** (धनैः + अपि) = धन से भी, **दारान्** = स्त्री की, **रक्षेत्** = रक्षा करनी चाहिये, **सततम्** = सर्वदा, **दारैरपि** (दारैः+ अपि) = स्त्री से भी, **धनैरपि** (धनैः + अपि) = धन से भी, **आत्मानम्** = अपने आप की, **रक्षेद्** = रक्षा करनी चाहिये ।

अनुवाद – आपत्ति काल के लिये धन की रक्षा करनी चाहिये, धन से भी (अधिक) स्त्री की रक्षा करनी चाहिये । सर्वदा स्त्री से भी (और) धन से भी (पहले) अपने आप की रक्षा करनी चाहिये ।

व्याख्या – आचार्य चाणक्य ने प्रथम पद्य में बतलाया था कि इस ग्रन्थ में अनेक शास्त्रों से नीतिपूर्ण उक्तियों को निकालकर संग्रहीत भी किया गया है । प्रस्तुत पद्य महाभारत के उद्योग पर्व (27.18) में भी प्राप्त होता है । प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में कभी न कभी किसी आपत्ति में पड़ता ही है, आचार्य यहाँ कहते हैं कि आपत्ति काल में किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में न जाते हुए मनुष्य को सबसे पहले स्वयं की रक्षा करनी चाहिये । यदि स्वयं को रक्षित कर लिया है तो अपनी स्त्री की रक्षा करनी चाहिये और तत्पश्चात् धन की रक्षा करनी चाहिये ।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

धनम् =धन मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग) द्वितीया विभक्ति, एकवचन = धन की

दारान् = दारा मूल शब्द (पुल्लिङ्ग) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन = स्त्री की

धनैः = धन मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन = धन से

दारैः = दारा मूल शब्द (पुल्लिङ्ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन = स्त्री से

अपि = भी (अव्यय)

आत्मानम् = अस्मद् मूल शब्द, द्वितीया विभक्ति, एकवचन = अपने आप की

रक्षेद्/रक्षेत् = रक्ष् धातु, विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन = रक्षा करनी चाहिये

2.2.5 धन की निस्सारता

आपदर्थे धनं रक्षेच्छ्रीमतां कुत आपदः ।
कदाचिच्चलिता लक्ष्मीः सञ्चितापि विनश्यति ।। 7 ।।

प्रसङ्ग – प्रस्तुत पद्य प्रश्नोत्तर रूप में है । यहाँ धन की निस्सारता को प्रतिपादित किया गया है।

अन्वय – आपदर्थे धनं रक्षेत् श्रीमतां आपदः कुतः ? कदाचिद् लक्ष्मीः चलिता सञ्चिता अपि विनश्यति ।

शब्दार्थ – **आपदर्थे** = आपत्ति काल के लिये, **धनम्** = धन की, **रक्षेत्** = रक्षा करनी चाहिये, **श्रीमताम्** = श्री से युक्त लोगों पर अर्थात् धनवान् लोगों पर, **आपदः** = आपत्तियाँ, **कुतः** = कहाँ (आती हैं) ? **कदाचिद्** = कभी, **लक्ष्मीः** = लक्ष्मी अर्थात् धन, **चलिता** = चला जाता है, **सञ्चिता** = इक्कट्ठा किया हुआ, **अपि** = भी, **विनश्यति** = नष्ट हो जाता है ।

अनुवाद – आपत्ति काल के लिये धन की रक्षा करनी चाहिये, श्री से युक्त लोगों पर अर्थात् धनवान् लोगों पर आपत्तियाँ कहाँ (आती हैं) ? कभी लक्ष्मी अर्थात् धन चला जाता है, इक्कट्ठा किया हुआ भी नष्ट हो जाता है ।

व्याख्या – प्रस्तुत पद्य में प्रश्न भी है और उत्तर भी है । एक व्यक्ति कहता है कि आपत्ति काल में सर्वदा धन की रक्षा करनी चाहिये । तो दूसरा कहता है अरे धनवानों पर विपत्तियाँ आती ही कहाँ हैं ? अर्थात् विपत्तियाँ आती ही नहीं । अन्य जन कहता है लक्ष्मी अत्यन्त चंचल होती है, न जाने धनी पुरुष के पास से कब अन्यत्र चली जाये । तब धनी व्यक्ति कहता है – यदि ऐसी बात है तो संचित किया हुआ धन भी कभी भी नष्ट हो सकता है । इस प्रकार इस पद्य में धन को महत्त्वहीन दिखाया गया है व यहाँ दान देने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है ।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

धनम् =धन मूल शब्द (नपुंसकलिङ्ग) द्वितीया विभक्ति, एकवचन = धन की

अपि = भी (अव्यय)

रक्षेद्/रक्षेत् = रक्ष् धातु, विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन = रक्षा करनी चाहिये

श्रीमताम् = श्रीमद् मूल शब्द, षष्ठी विभक्ति, बहुवचन = श्री से युक्त लोगों पर अर्थात् धनवान् लोगों पर

आपदः = आपद् मूल शब्द, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन = आपत्तियाँ

कुतः = किम् + तसिल् प्रत्यय = कहाँ से

लक्ष्मीः = लक्ष्मी मूल शब्द (स्त्रीलिङ्ग) प्रथमा विभक्ति, एकवचन = लक्ष्मी

चलिता = चल् धातु + क्त प्रत्यय + टाप् प्रत्यय, प्रथमा विभक्ति, एकवचन

सञ्चिता = सम् + चिञ् धातु + क्त प्रत्यय + टाप् प्रत्यय, प्रथमा विभक्ति, एकवचन

विनश्यति = वि उपसर्ग, नश् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन = नष्ट हो जाता है ।

2.2.6 त्यागने योग्य स्थान

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न बान्धवाः ।
न च विद्यागमः कश्चित् तं देशं परिवर्जयेत् ।। 8 ।।

प्रसङ्ग –कौन सा स्थान रहने योग्य नहीं है, इसका स्पष्टीकरण प्रस्तुत पद्य में किया गया है ।

अन्वय – यस्मिन् देशे सम्मानः न, वृत्तिः न, बान्धवाः न, कश्चित् च विद्यागमः न तं देशं परिवर्जयेत् ।

शब्दार्थ – **यस्मिन्** = जिस, **देशे** = स्थान पर, **सम्मानः** = सम्मान, **न** = नहीं, **वृत्तिः** = आजीविका, **न** = नहीं, **बान्धवाः** = भाई बन्धु, **न** = नहीं, **च** = और **कश्चित्** = किसी, **विद्यागमः** = विद्या की प्राप्ति, **न** = नहीं, **तम्** = उस, **देशम्** = स्थान को, **परिवर्जयेत्** = छोड़ देना चाहिये ।

अनुवाद – जिस स्थान पर सम्मान नहीं, आजीविका नहीं, भाई बन्धु नहीं और किसी विद्या की प्राप्ति नहीं उस स्थान को छोड़ देना चाहिये ।

व्याख्या – मनुष्यों के जीवन में सम्मान, आजीविका, बन्धु-बान्धव व विद्या प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है । सम्मान के बिना व्यक्ति मृत-प्राय हो जाता है व जीवन-यापन हेतु आजीविका का होना भी अत्यन्त आवश्यक है, जिससे वह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर सके । साथ ही जीवन में अपने परिवार जन व मित्रों का होना भी अत्यन्त आवश्यक है जिनसे वह अपने सुख-दुःख को बाँट सके । विद्या प्राप्त होने पर सम्मान, आजीविका व बन्धु बान्धव स्वतः ही निकट आ जाते हैं अतः विद्या सर्वोपरि है । आचार्य चाणक्य कहते हैं कि जहाँ इन चारों की प्राप्ति न हो वह स्थल किसी भी व्यक्ति को यथाशीघ्र त्याग देना चाहिये । मनुष्य को उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र जाकर रहना चाहिये, जहाँ इन चारों की प्राप्ति हो, क्योंकि जीवन यापन हेतु इन चारों का अपना-अपना विशेष महत्त्व है ।

छन्द - प्रस्तुत पद्य में अनुष्टुप् छन्द है ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी –

यस्मिन् = यत् मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), सप्तमी विभक्ति, एकवचन = जिस ।

देशे = देश मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), सप्तमी विभक्ति, एकवचन = देश में

अथवा स्थान पर ।

सम्मानः = सम्मान मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = सम्मान ।

न = नहीं (अव्यय) ।

वृत्तिः = वृत्ति मूल शब्द (स्त्रीलिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, एकवचन = आजीविका ।

बान्धवाः = बान्धव मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), प्रथमा विभक्ति, बहुवचन = भाई बन्धु ।

च = और (अव्यय)

कश्चित् = किसी अथवा कोई ।

विद्यागमः = विद्यायाः आगमः - षष्ठी तत्पुरुष समास, विद्या + आगमः = विद्या की प्राप्ति ।

तम् = तत् मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), द्वितीया विभक्ति, एकवचन = उस ।

देशम् = देश मूल शब्द (पुल्लिङ्ग), द्वितीया विभक्ति, एकवचन = देश / स्थान को ।

परिवर्जयेत् = परि उपसर्ग + वृज् धातु + णिच्, विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन = छोड़ देना चाहिये ।

बोध/अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से उचिततम उत्तर का चयन कीजिये –

(1.1) चाणक्य-नीति ग्रन्थ में मंगलाचरण है –

(1) नमस्कारात्मक

(5) वस्तुनिर्देशात्मक

(6) आशीर्वादात्मक

(7) उपर्युक्त सभी

(1.2) चाणक्य नीति ग्रन्थ के लेखन का प्रयोजन –

(क) गूढ रहस्यों का स्पष्टीकरण

(ख) मानव मात्र के हित की कामना

(ग) सर्वज्ञता

(घ) श्रेष्ठ व्यक्ति निर्माण

(1.3) तदहं संप्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया । इस पङ्क्ति में क्रियापद क्या है ?

(क) लोकानाम्

(ख) हितकाम्यया

(ग) संप्रवक्ष्यामि

(घ) तदहम्

2. सर्वथा रक्षणीय क्या है ?
3. कौन से स्थान को यथाशीघ्र त्याग देना चाहिये ?
4. बुद्धिमान् व्यक्ति भी कब दुःख में पड़ जाता है ?
5. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिये –

नानाशास्त्रोधृतम्, मृत्युरेव, कार्याऽकार्यम्, दारैरपि, पण्डितोऽप्यवसीदति

अभ्यास प्रश्न –

(1) यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न बान्धवाः। न च विद्यागमः कश्चित्तं देशं परिवर्जयेत् ।। इस पद्य की व्याख्या अपने शब्दों में करें ।

2.3 सारांश

प्रकृत अध्याय में प्रारम्भिक पद्य नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है । इस अध्याय में ग्रन्थ की रचना एवं अध्ययन के प्रयोजन को बताया गया है तत्पश्चात् दुर्जनों की सङ्गति से दुःख की प्राप्ति, धन की सार हीनता, रहने योग्य व त्यागने योग्य स्थान का वर्णन किया गया है ।

2.4 शब्दावली

प्रणम्य = प्रणाम करके ।

वक्ष्ये = कहूँगा ।

सत्तमः = उत्तम ।

अधीत्य = पढ़कर ।

प्रपद्यते = प्राप्त किया जाता है ।

सम्प्रवक्ष्यामि = ठीक प्रकार से कहूँगा ।

सम्प्रयोगेण = व्यवहार करने से ।

अवसीदति = दुःखी होता है ।

भार्या = पत्नी

शठम् = धूर्त

उत्तरदायकः = उत्तर देने वाला अर्थात् पलट कर जवाब देने वाला

भृत्यः = सेवक

ससर्पे गृहे = साँप वाले घर में (अर्थात् जहाँ साँप रहता हो)

आपदर्थे = आपत्ति काल के लिये

रक्षेद् = रक्षा करनी चाहिये

दारान् = स्त्री की

सततम् = सर्वदा

आत्मानम् = अपने आप की

श्रीमताम् = श्री से युक्त लोगों पर अर्थात् धनवान् लोगों पर

आपदः = आपत्तियाँ

कुतः = कहाँ (आती हैं) ?

कदाचिद् = कभी

सञ्चिता = इक्कट्ठा किया हुआ

अपि = भी

यस्मिन् = जिस में अथवा जिस पर

देशे = देश में अथवा स्थान पर

वृत्तिः = आजीविका

कश्चित् = कोई अथवा किसी

परिवर्जयेत् = छोड़ देना चाहिये ।

2.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अनुवादचन्द्रिका – डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवादरत्नाकरः - डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी – चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2001
- अमरकोश, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलो रोड़, 2011
- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री – मोतीलाल बनारसीदास
- संस्कृत शिक्षण सरणी – आचार्य राम शास्त्री - परिमल पब्लिकेशन दिल्ली
- संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी, 2001
- संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018
- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
- सम्पूर्ण चाणक्य नीति, डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल, अरिहन्त प्रकाशन, जोधपुर, 2016
- spokensanskrit.org
- www.ashtadhyayi.com

2.6 बोध/प्रश्नों के उत्तर

(1.1) (क) नमस्कारात्मक

(1.2) (ख) मानव मात्र के हित की कामना

(1.3) (ग) संप्रवक्ष्यामि

2. स्वयम् की रक्षा।

3. जिस स्थान पर सम्मान नहीं, आजीविका नहीं, भाई-बन्धु नहीं और

किसी विद्या की प्राप्ति नहीं उस स्थान को छोड़ देना चाहिये ।

4. मूर्ख शिष्यों को उपदेश देने से और दुष्ट स्त्री का भरण पोषण करणे से, दुःखियों के साथ व्यवहार करने से बुद्धिमान् मनुष्य भी दुःख प्राप्त करता है ।

5. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिये –

नानाशास्त्र + उद्धृतम्, मृत्युः + एव, कार्य + अकार्यम्, दारैः + अपि, पण्डितः + अपि + अवसीदति

1. अभ्यास प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयम् लिखें ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY